जन जागरन सांस्कृतिक मंच

"नवां अन्जोर"

का छत्तीसगढ़ी नाटक

वीर नारायण सिंह

लाल जोहार

छत्तीसगढ़ मुक्ति मोर्चा.

यह नाटक सन् १८५६–५७ की सोनाखान की किसान क्रान्ति के इतिहास पर आधारित है । वर्तमान में सोनाखान रायपुर जिला (म. प्र.) में स्थित है । नारायण सिंह, साहूकार मिश्रा, इलियट, स्मीथ यह सभी एतिहासिक नाम है । शेष कुछ चरित्रों की नाटक में काल्पनिक नाम दिया गया है । शासक वर्ग के साजिश से भुलाया गया, सोनाखान और नारायणसिंह का इतिहास छत्तीसगढ मुक्ति मोर्चा के प्रयासों से मेहनतकश जनता के सामने आया है । क्रान्तिकारी इतिहास पर आधारित इस नाटक को "नवां अंजोर" सांस्कृतिक मंच ने छत्तीसगढ़ के अनेक शहर और ग्रामों में पिछले कई साल तक प्रस्तुत किया है ।

छत्तीसगढ के कोने, कोने में इतिहास को पहुंचाने के लिए जरुरी है कि नाटक का मंचन सांस्कृतिक मण्डलियों द्वारा क्रांतिकारी विचार लेकर प्रस्तुत करें इसी उम्मीद के साथ इस नाटक को प्रकाशित किया जा रहा है ।

◆ कहानी का लेखक ◆

छत्तीसगढ़ मुक्ति मोर्चा के संस्थापक

शहीद कामरेड शंकर गुहा नियोगी

◆ गीत के रचनाकार ◆

श्री फागुराम यादव

◆ संवाद लेखक ◆

श्री लक्ष्मण देशमुख

◆ सलाहकार ◆

रामलाल विश्वकर्मा

– सारांश कहानी –

यह कहानी सन् १८५६-५७ की है, जब हिन्दुस्तान के हर कोने-कोने में आजादी की लड़ाई लड़ी जा रही थी, अनेकों वीर बहादुर अपने वतन के वास्ते फांसी के फन्दे को चुमकर शहीद हो गये, उन वीरों में से छत्तीसगढ़ सोनाखान क्षेत्र के वीर नारायणसिंह भी थे, जिन्होंने संगठित किसानों को लेकर ब्रिटिश सरकार से युद्ध किया, साथ ही साथ शोषण भ्रष्टाचारी के खिलाफ अपनी आवाज बुलन्द किया, जिसके लिये वीर नारायणसिंह को शहीद होना पड़ा ।

– नाटक के प्रमुख पात्र –

नारायणसिंह	–	सोनाखान की किसान क्रान्ति के नेता
अनुपसिंह	–	कसडोल का ब्रिटिश दलाल जमींदार
मिश्रा	–	सोनाखान, कसडोल का पूंजीपति साहूकार
इलियट	–	अंग्रेज कमिश्नर
स्मीथ	–	अंग्रेज अफसर
शान्ति	–	नारायणसिंह की पत्नि
गोविन्द	–	नारायणसिंह का पुत्र
मां	–	नारायणसिंह की मां
धरम मुखिया	–	गांव का मुखिया
बिरझु	–	ग्रामीण किसान
सोनू	–	ग्रामीण युवक
भीखम	–	किसान
जानू	–	ग्रामीण युवक
पारो	–	ग्रामीण महिला
मुनीम	–	साहूकार मिश्रा का मुनीम, पुलिस, सिपाही, नौकर अन्य किसान इत्यादि.

- अंक पहला -

(सीन पहला)

(सन् १८५६ की अकाल की झांकी)

(ग्रामीण किसान बरखारानी की स्तुति कर रहे हैं)

(गीत - १)

सुन ले हमर गुहार ला
चिन्ह ले हमर पुकार ला
हमला तैं तरसाथस कांबर
करिया बादर रे, आन बरस देना, करिया बादर..

झुम-झुम ले तैं आथस
फेर तैं कहां लुका जाथस
जिवला तैं तरसाथस
रोटी कस टूहूं तैं देखाथस
देखत-देखत आंखी पिरागे
छागे उदासी सब घर मां, करिया बादर..

हरियर खेती हा मुरझागे
धरती के छाती हा चिरागे
सुखखा होगे ये भुइयां हा
लक्ष्मी के चारा हा सिरागे
हरियर करदे ये धरती ला
आना बरस दे पातर-पातर, करिया बादर..

पानी बिना रे जिवहा तरसगे
चिरई अऊ चिरगुन हा भटकत हे
ओर अमृत बून्द के खोज करे बर
खोन्धरा ला छोड़ के जावत हे
आना बरसदे नीठुर जी के
सबला तैं भटकाथस कांबर, करिया बादर..

(सोनाखान की नारी-पुरुष और बच्चे कुर्रुपाठ देवता की पूजा करते हैं)

(समूह गान – २)

ये छत्तीसगढ़ मइया हमला माफी दे दे
तोर चरण परत हन, आरती करत हन
हमला शक्ति दे दे
कोख ले तोर हम जनम धरे हन, जनम धरे हन
अंछरा मा झूले हन, तोर गोदी मा पलेहन
शरण मा आयेन, ये मोर मइया, सबला आशीष दे दे
हे छत्तीसगढ़ हमला माफी दे दे
हे कुर्रुपाठ देवता, डोंगरी तोला बंदाथन
कर दे सहायता, तोला हम सुमरत हन, तोला हम सुमरत हन
सबके सुख बर अमृत पानी, तै रिम-झिम बरसा दे
हे छत्तीसगढ़ मइया, हमला माफी दे दे

मुखिया – हे कुर्रुपाठ देवता, हम ये सोनाखान के किसान, मजदूर, बसुन्धरा के लोग-लइका ये अकाल के मार लेबांचे बर तोर शरण मा आये हन, प्रभु हम गरीब ला तोर आशीष के छइहां मा राख ले।
बोलो कुर्रुपाठ देवता की..

सभी किसान – जय !

मुखिया – बोलो बूढ़ादेव की..

सभी किसान – जय !

बिरझू – (हाथ जोड़ के) मुखिया ठाकुर ! आज मोर घर मा तीन जुवार होगे, चुल्हा मा आगी नइ बरे हे ठाकुर, घर मा एकोदाना नइये, सेठ-महाजन मन करा गेयेव, पर गरीब के गोहार ला कोन्हो नइ पतियाइन, घर मा लइका मन पोट-पोट भुख मरत हे ठाकुर !

खोजे मा बनी-भूति घलो नइ मिलेय, अब तुम्ही मन बताव हम गरीब कइसे करबो ?

सोनू – मुखिया ठाकुर ! ये साल हा हमर बर अकाल नहीं, काल बनगे ठाकुर, काल बनगे, कइसे करबो, काला खाबो, कहां ले चऊंर-दार लाबो, थोर-बहुत अन्न-पानी रिहिस हे तहू हा सिरागे, ये अकाल के मारे घर के बटकी-भाड़ा बइला-भैंइसा घलो बेचागे, अब ठाकुर तीहीं बता कइसे करबो. ये गांव मा रहन की नई रहन, के कोन्हों डाहर जाबोन ?

भीखम – हां ठाकुर ! एक तो अइसे पर के गुलामी मा पेरागे हन ! अऊ ऊपर ले अकाल ठाकुर, हमर गरीब के कोन्हों पुछइया नइये । कोन्हो चिन्हइया नइये ठाकुर, ये जमीदार, सेठ-साहूकार पूंजी वाले मन घलो फूलगे, कावर के अंग्रेज मन उकर पुरखा ये ना ?

मुखिया – गांव के किसान भाई हो, मन मा धीरज धरव, कइसनों मरत हन तभो ले अपन लाज ला अपन दुःख ला बड़े आदमी मन करा बतांइगे, सबो कोई एके संग चलव, ये मा कोई लाज नइये !

भीखम – लाज.... मुखिया ठाकुर ! अब हमर गरीब मन के का इज्जत हे, का शरम हे, का लाज हे, मुखिया ठाकुर ! हमर गरीब के इज्जत लुटा गेय, शरम बेचा गेय, लाज मरगे ठाकुर – ये महतारी के, ये बेटी मन के, अऊ ये बहिनी मन के, कोई इज्जत नइये ठाकुर, कोई इज्जत नइये, गरीब बाप के, भाई के, अऊ बेटा मन के कोई सहारा नइये । एक तो अइसे मरत हन उंकर घर मा जाबोन ते, सेठ-साहूकार कुकुर मन के मार मा अऊ मर जाबो, नइ जावन ठाकुर ये गांव ला छोड़ के भले कोन्हों डहर चल देबो ।

मुखिया – हां भाई हो, जम्मो संगवारी मनके इही राय हवे, तब मय एके झन का करहूं, चलव कोन्हों डहर जाके बनी भूति करबो ।
चलव भाई बहिनो हो चलव...

(अकाल जैसे बिपत से बचने के लिये किसान बाल बच्चे सहित अपने सामानों को बांधकर सोनाखान गांव छोड़कर जा रहे हैं)

(नारायणसिंह शिकार खेलकर गांव में आ रहा है, गांव के किसानों को समान लेकर जाते हुए देखकर रुक जाता है, और जाकर किसानों से पूछता है)

नारायणसिंह – मुखिया ठाकुर ! कहां जावत हव, मोर किसान भाई हो, ये सब घरके, सोनाखान ला छोड़त हव ।

मुखिया – बेटा नारायण ! अन्न-पानी के बिना तड़फत चोला, अपन जुगाड़ खोजेबर जावत हन ठाकुर, हम गरीब ये काल नइये अकाल ले, बांचे बर कहूं डहर जावत हन ।

नारायणसिंह – मुखिया बबा, ये साल सोनाखान में नहीं, जम्मो देश मा अकाल परे हे बबा, आज तुमन ये सोनाखान के किसान ये गांव ला छोड़ के जावत हव, तुम्हरे सहीं दूसर गांव के मन घलों अपन गांव ला छोड़ के जावत होहो, तब तुमन कहां डरा बनाहू, कोन गांव मा बनी-भूति करहू ?

मुखिया – जिहां हमर किस्मत लगे होही नारायण ! हम वहीं अपन खाबो-कमाबो बेटा ।

नारायणसिंह – नहीं... ! मोर किसान-मजदूर भाई हो, गांव छोड़के कोन्हो नइ जावन, भूख मा

कोन्हो मर नइ जाय, चलव आज जुर मिल के एकता होके, सेठ-साहूकार मन ला चऊर-दार मांगबो, अइसे नहीं ते ब्याज मा तो देही, कर्जा मा तो देही ।

मुखिया – सही बात ये नारायणसिंह ! तुम्हर कहना बड़ सुघ्घर कस लागीस हे ।

बिरझू – हव ये नारायणसिंह कहत हे तेहा सही बात ये, बोलो नारायणसिंह ठाकुर की जय !

सभी किसान – जय !

नारायणसिंह – भाई हो तब अब बेर काबर करबो चलो, बियारी के बेरा ले चऊर-दार मांग के लाबो ।

सभी किसान – हव चलव । (सबको जाना है)

– अंक पहला –

–: सीन दूसरा :–

(सोनाखान के मशहुर पूंजीपति मिश्रा के घर । मिश्रा कुर्सी पर बैठे मुंछ को ऐंठ रहा है दो नौकर पांव दबा रहे हैं, नारायणसिंह तथा किसानों का एक साथ प्रवेश)

नारायणसिंह – मिश्राजी !

मिश्रा – (हंसते हुए) हे..हे..आइयें, आइये, आइये, भाई नारायणसिंहजी, राम-राम जयरामजी की, बैठिये, अरे बिहारी, कुर्सी तो ला ।

नारायणसिंह – मिश्राजी, अभी बैइठे के बेरा नइये, अभी दाना-पानी, चऊर-दार के जरुरत हे । मिश्रा, अभी पेट के सवाल हे ।

मिश्रा – अरे भाई आप लोगो के खाने-पीने का व्यवस्था भी करेंगे । पहले आराम तो करो । काहे तकलीफ कर रहे हो ।

नारायणसिंह – मिश्राजी, हमला तो तकलीफ हर संगवारी बना लेहे पंडित, पर आप मन तो अच्छा आराम से हावो ना ?

मिश्रा – अरे भइया ! अपना बात छोड़ो, आपको क्या कहना है ?

नारायणसिंह – कहना . .मिश्रा वोही केहे बर तो आये हन, मैं का कहूं, देख किसान के चेहरा ला का काहत हे, ये गरीब के पेट ला देख, येला का चीज के जरुरत हे, ये गरीब ला पुछ । येकर घर मां नान नान लोग-लइका हे, ओला जाके पुछ मिश्रा . .देख ! अनमोल आंसु के बूंद ला धरे तोर से का अरजी करत हे ।

मिश्रा – का बात ये . .ये मोर .

नारायणसिंह – समझ में नइ आवत हे न पंडित, हम गरीब किसान, मजदूर, वसुन्धरा ये परे अकाल ले बांचे बर कर्जा मा अनाज मांगत हन । सेठ ! अब तो समझे ? अब तो तोर समझ मा आही, ये बिपत के समय मा कुछ सहारा कर दे ।

मिश्रा – बात तो सही है नारायणसिंह, पर मेरा भी एक दुःख है, इस वर्ष मेरी बड़ी लड़की की शादी किया जिसमें नगद दस हजार रुपये और बीस क्विंटल चांवल खर्च हो गया । अब जो कुछ बचा होगा तो अभी का खर्च चल रहा है, नौकरों को चला रहा हूं, नहीं तो क्या होता ।

नारायणसिंह – मिश्राजी तोर बेटी बर दस हजार खर्चा करे, का भइस पंडितजी, पर समझबे ते

ये गांव के किसान मन तोरेच लइका ये । ज्यादा नही ते आज बर तो चला दे, काली बर देखे परही ।

मिश्रा – नारायणसिंह रहने पर मैं आपके लिए कब इन्कार किया है ।

नारायणसिंह – तुमन कब किसान मन के दुःख ला पतियाये हव मिश्रा । भले मांग लेहु पर कभू नइ देये हव । संगवारी हो, जे घर मा तुम्हर खाये बर एक दाना नइ मिले ओ घर मा का मुंह देखाइन्गे, चलव ।

सभी किसान – चलव !

(गीत – ३)

ये मोर भारत के माटी हा, हीरा-मोती अऊ सोना उगलथेगा,
धान के हावे कटोरा रे संगी, तबले लोगन भुख मरथेगा,
मरथे किसान हा भइया, बैंक ले करजा करकेगा,
धान ला उपजात है संगी, दिन रात ला मेहनत करकेगा,
मेहनत के अनाज संगी, सहर के कोख में भरथेगा,
धान के हावे कटोरा रे संगी.. ।
एक डाहन हम देखथन भइया, पूंजी के गा पहाड़ हावे,
दुसरा डाहन मोर मेहनत करइया, दिन भरगा बिन खाय हावे,
गरीब ला अऊ छागे गरीबी, धनी के धन अऊ बढ़गेगा,
धान के हावे कटोरा रे संगी.. ।
पूंजीपति के कुकुर हा गा, गद्दा के ऊपर सोवथ हे गा,
गरीब के पहने बर नइये कपड़ा, भूइयां मा सुते रोवथेगा,
खाना पिना बिन तन हा सुखागे, आंसु ला पीके दिन काटथेगा,
धान के हावे कटोरा रे संगी.. ।

करजा में भइया किसान पिरोगे,
जुच्छा है धान के कोठी हा,
मजदूर ला गा नसीब होगे,
एक बखत के रोटी हा,
जनता के नइये देखइया कोन्हो,
नेतामन के महल बनथेगा,
धान के हावे कटोरा रे संगी..।
पुरा ला नई करन सकेगा, शहीद मन के सपना ला,
स्वार्थ मा सब बूड़ जाए गए संगी, देखिन अपन-अपन ला,
नेता बनगे दल बदलु, आपस आपस में लड़थेगा,
धान के हावे कटोरा रे संगी..।

– साहूकार का मकान –

(मिश्रा कुर्सी में बैठा है, एक नौकर उसका पैर दबा रहा है, मुनीम का प्रवेश होना)

मुनीम – (प्रवेश कर) का कहत रिहिन हे सेठजी ।

मिश्रा – ऊंह..आया था साला नेतागिरी चलाने, बड़ा लम्बा-चौड़ा सेखी मार रहा था ।

मुनीम – फोकट मा कोन्हो देही साले मन ला, लाने तो बटकी-लोटा, गाय-बइला ला, एक पसर के जगह एक पैइली दिन्गे कैसे सेठ ।

मिश्रा – अरे मुनीमजी वही तो मैं भी कह रहा था। आ गये, उकर मन के दिमाक मा गोबर भरे हे गोबर ।

(मुनीमजी अन्दर से चाय लेकर आता है और सेठ को चाय देकर)

(लीजिये सेठजी चाय, कम से कम दिमाक तो ठंडा कर लेव)

मिश्रा – (चाय लेते हुए) कर्ज में क्या मुनीमजी, इस वर्ष सोनाखान वाले अपनी औरतों को भी गिरवी पर रखेगें तो पर भी एक दाना नहीं देगें ।

मुनीम – काबर ?

मिश्रा – इसलिए कि इस वर्ष सोनाखान अकाल की मुंह में बसा हुआ है । समझे !

मुनीम – अरे हां ! ये होइस न बात । ठउका केहेव सेठ ठउका केहेव, येला तो मय हर काली के जानत रेहेव ।

मिश्रा – तो फिर कल क्यों नहीं बताया ।

मुनीम – काबर कि ये बात हर आज होइस हे, हय न भई ।

(साहूकार का बचा हुआ चाय दुसरा नौकर पी जाता है, साहूकार चाय खो गया समझकर ढुढने लगता है, मुनीम भी ढुढता है, अन्त में नौकर को चाय पीते पकड़ लेते हैं, मुनीम उसे दो-चार चांटे मारता है, जिससे दर्शकों का मनोरंजन होता है)

(परदा बंद)

– अंक पहला –

– सीन तीसरा –

"नारायणसिंह का घर"

(सोनाखान के पुरुष, महिला एवं बच्चे बारी बारी से नारायणसिंह से परम्परानुसार जोहार भेंटकर यथा स्थान लेकर बैठ जाते हैं, तथा अपना दुःख उनके समक्ष प्रगट करते हैं)

बिरझू – ठाकुर, अब कैइसे करबो ?

सोनू – (प्रवेश होकर रोते हुए) मोर दू झन लइका

भूख मा मरगे ठाकुर, आज ये गरीब तोर शरण मा आये है, हमर कइसनो करके परान लाबचा दे ठाकुर ।

नारायणसिंह – (दुःखी होकर) मुखिया बबा ! मोर घर तो कुछ नइये, पर हां मोर पुरखा के एक निशानी हे, चांदी के तलवार येला आज किसान मन के एक जुवार के भूख मिटा सकही तो मय येला देवत हव, अउ शांति !

शांति – काये ठाकुर !

नारायणसिंह – तोर जतीक गहना हे तेला गरीब किसान के लइका मन बर अपन लइका समझ के दे दे शांति !

शांति – हव गोविन्द के बबा ।

(सहर्ष स्वीकार करते हुए शांति सभी गहना उतार कर रख देती है)

मुखिया – नारायण ये तेहर का करत हस ठाकुर ।

नारायणसिंह – एक मानवता के करतब ला नियावथव मुखिया बबा ।

मुखिया – तब का अपन नारी के सिन्गार ला उतारके ?

नारायणसिंह – मुखिया बबा, नारी के असली सिन्गार तो ओकर पति हर होथे, मुखिया बबा, गहना हर तो एक दिखावा ये ।

मुखिया – ठाकुर ! किसान मन के खातिर अपन तन, मन, धन सबला बांट डारे, हम किसान के गोहार ला अपन लइका असन समझ के आज ठाकुर रामराज के पुरखौती चांदी के तलवार अऊ अपन नारी के सिन्गार ला सौंपत हस ।

अब तोर लइका-बच्चा काला खाही ? ये पेट के खातिर सबो मरत हन ।

नारायणसिंह – मोर किसान संगवारी हो, आज के भूख ला मिटा डारव काली बर देखे जाही ।

मुखिया – नारायणसिंह तोर जैइसे जवान मन आज सोना खान के भूख संग जूझत हस तैइसे वहु मन तियार होतीन तो मय कहीथव का नारायण आज मोर सपना पुरा करे बर एक झन तहीं दिखथस नरायण । आज तोला ये गांव सोना खान के ये मौउर (मुकुट जो मुर्गी के पंख से बना है तथा कलगी हरा रंग की) तोला देवत हव अब ये सोनाखान के भार तोर उपर हे ।

(नारायणसिंह को पहनाता है)

नारायणसिंह – ये का बबा, ये तोर राहत ले मोर का हक हे ।

मुखिया – तोर उमर हा तो नहीं नारायण, पर हां ! तोर गुण हा ये हक के लाइक हे ।

भीखम – बोलो नारायणसिंह ठाकुर की .

सब किसान – जय !

(सबका प्रस्थान)

– नारायणसिंह का घर –

(नारायणसिंह अकेला चिन्तीत बैठा है)

(ग्रामीण किसानों का दुःखी मुद्रा में नारायणसिंह के घर प्रवेश, बारी-बारी से जोहार-भेंट मिलन होना)

मुखिया – ठाकुर ! अब सोनाखान के गरीब किसान ये गांव ला छोड़े बर विवश होगे हे, काबर कि दुःख अऊ

भूख ला सहन नइ कर सकत हन, गांव के जम्मो लोग-लइका मन, अन्न-पानी के बिना मरत हे ठाकुर ! जइसे पानी के बिना मछरी हा मर जाथे, अब कोन्हों डाहर शहर जाके बनी-भूति करबो ठाकुर, तभे हम अपन परिवार लोग-लइका के पालन-पोषण कर सकबो, आखरी बेरा तोर सन मुलाकात करे बर हाये हवन ठाकुर, भूख ला अब हम सहन नहीं कर सकन ।

नारायणसिंह – मुखिया बबा ! तुमन भूख-भूख चिल्लावत हव, मय कई बार तुम्हर मुंह ले सुनत हव, भूख मा कोन्हों मर नइ जाये, भले लड़ाई के मैदान मा परान हर चले जाही, तो शहीद मन के दरजा मिलही, हम भारत माता, छत्तीसगढ़ दाई के कायर बेटा बनके पीछु नइ हटन, जेन भाई करा हिम्मत नइ हे तो जाव सोनाखान ला खाली करके, मय एके झन ये जमाखोर सेठ-साहूकार अउ अंग्रेज सरकार से लड़हूं, बिरझू भइया ये धरती मइया चिल्ला के काहत हे, ये हत्यारा अंग्रेज अउ ऊंकर दलाल भ्रष्टाचारी साहूकार, जे मन ये गरीब कमइया मन के लहु ला बघवा बनके पीयथ हे, इकर बंधन से मोला मुक्त कर देव, ये देश ले भगा देव, पापी मन ला कहि के का हमर ये महतारी पर के गुलामी मा रही ?

मोखम – तब तहीं बता ठाकुर ! तय जइसे कहिबे हम वेइसने करबो ।

नारायणसिंह – हमला अब अपन आजादी, अपन अधिकार अपन हक बर संघर्ष करना हे, तो मय अवाज दे के काहत हव, ये हमर किसान मजदूर, दुश्मन ला हटाये बर लड़हु कि नइ लड़व ?

सभी किसान, महिला – लड़बोन ठाकुर, लड़बोन !

नारायणसिंह – मोला कइसे विसवास होही कि तुमन हर दुश्मन संग लड़े बर तइयार हव । नहीं, किसान भाई हो तुहला दुश्मन मन संग टकराय बर एकता के सबसे बड़े ताकत तइयार करना हे, पथरा कस करेजा रखना हे, अउ किरीया खाना हे, कि हम अपन परान ये भूइंया बर कुरबान कर देबोन ।

मुखिया – जैइसे कसम खवाबे ठाकुर हमला स्वीकार हे ।

नारायणसिंह – तब कसम खाव ये भारत माता के, कसम खाव ये सोनाखान के, कसम खाव ये महतारी के, जेकर सात धार के दूध पीये हव, कसम खाव कुरुंपाठ देवता के, तब मय जानहूं कि हां ये छत्तीसगढ़ के माटी मा माई के लाल पैदा होगे हे, जेहर अपन देश, अपन हक, अपन आजादी बर मरे-मीटे बर तइयार हे ।

मुखिया – कसम हे ये भारत माता के, ये माटी के, कसम हे सोनाखान के, कसम हे ओ महतारी के, जेकर सात धार के दुध पीये हन, कसम हे कुरुंपाठ देवता के, आज हम कसम खाके काहत हन अपन आजादी बर, अपन अधिकार

बर ये पूंजीपति जे मन हमर शोषण करत हे तेला हटाय बर अपन परान ला दे देबोन ठाकुर !

नारायणसिंह – सगवारी हो, आज मोला अतका उमंग होगे हे कि झुमर-झुमर के नाचे के मन हा होथे, पर नहीं अभी हमला नाचना नइ हे, भूख असन काल से लड़ना हे, अभी हमला ओ साहूकार मन के घर जाना हे, जेमन तुहर कमाय चीज ला अपन गोदाम मा भरे हे, हम अनाज के पैदा कराइया किसान, भूख मा मरबो, अऊ जेहर कभू नागर नइ धरे हे तेहर आराम से खाही, अइसन कभू नइ हो सके, संगवारी हो, एक बार मय तुहर से अऊ पूछत हव अपन आजादी बर, अपन अधिकार बर लड़बोन कि नइ लड़बोन ?

सभी किसान – लड़बोन ठाकुर ! तन-मन दे के लड़बोन ।

नारायणसिंह – तो फेर का के देरी हे, चलव वो सेठ साहूकार मन के घर जिहां ये गांव के किसान मन के पसीना मा उपजारे, किसान के लहु मा, सनाय धान-कोदो, ला अपन गोदाम मा भरे हे, हम गरीब मन के शोषन करत हे । का येला हम सहन करबो ? नहीं संगवारी हो, आज हम देखा दिन्गे कि हमर किसान, मजदूर के एकता मा का ताकत हे, का शक्ति हे, का बुद्धि हे, जेन हर अपन नसीब

के चीज वर का नइ कर सके, इंकलाब . . .

सभी किसान, महिला – जिन्दाबाद !

भीखम – जय हो नारायणसिंह ठाकुर .

सभी किसान, महिला – जय !

नारायणसिंह ठाकुर – चलो !

सभी किसान, महिला – चलो !

(गीत – ४)

उठ मजदूर जाग किसान रात हा पहागे रे
कदम कदम बढ़े चलो, लड़के बेरा आगे रे
आज के व्यवस्था के लड़ाई हे, लड़ाई हे
शोषण के खिलाफ मा लड़ई हे, लड़ाई हे
चल मजदूर, चल किसान
हाथ में उठा मशाल
अत्याचार के खिलाफ मा लड़ाई हे
दिन व दिन आई ये मंहगाई, हम आगे रे
कदम कदम बढ़े चलो, लड़के बेरा आगे रे
काला कानून अध्यादेश आगे रे
किसान अऊ मजदूर के बैरी आगे रे
हक ला सबके खा जाही
हम ला सब दबा जाही
फिर से अपातकाल ला आगे रे
जाग किसान, जाग मजदूर
वो दिन अब नाइये दूर
कदम कदम बढ़े चलो, लड़के बेरा आगे रे
खुद जागो अऊ सबला तुम जगाव रे
अत्याचार के बीमारी ला भगावव रे
संग संग मिलके चलो । एकता बनाके चलो
भ्रष्टाचार देश ले हटावो रे

निच्चट झन सुते राहव रात हा पहागे रे
कदम कदम बढ़े चलो, लड़े के बेरा आगे रे।

– अंक पहला –

– सीन चौथा –

(स्थान – मिश्रा का घर)

(नारायणसिंह तथा किसानों के साथ प्रवेश)

नारायणसिंह – इंकलाब..

सभी किसान, महिला – जिन्दाबाद..

मिश्रा – अरे.. क्या बात है ठाकुर !

नारायणसिंह – मिश्रा, कुछ केहे बताये के पहिली हम किसान मन तोर से गांव के आदमी समझ के अनाज मांगत हन पंडित ! चाहे कर्जा समझस, चाहे बाढ़ी समझस, चाहे दान समझस, आज ये किसान मन दुसर बेरा तोर अंगना मा आके अनाज मांगत हे ।

मिश्रा – नारायणसिंह ! ये तो पहले हीं बता चुका हूं कि .

नारायणसिंह – कि तोर घर मा खाय-पीये बर अनाज नइये ना मिश्रा, तभे तो सुखाय असन दिखत हस बेइमान, पापी, किसान मन के ये गांव के अनाज ला जम्मो तोर कोठी मा भरे हस, ये ही किसान सब ला अपन पसीना मा उपजारे अनाज मा पालत-पोसत हस मिश्रा ? ये ही मजदूर के मेहनत के लहु मा ये संसार के सिरजन होय हे, अउ तैं का करे ? बता पंडित, तैं का करे ? बोल हमर

गांव के अनाज ला देना हे कि नइ देना हे ?

मिश्रा – मेरे पास कुछ नहीं है नारायणसिंह, मैं कसम खाकर कहता हूं ।

नारायणसिंह – तोर घर कुछ नइये ?

मिश्रा – नही नारायण कुछ नही है ।

नारायणसिंह – किसान भाई हो, काला देखत हव ? ये पंडित के घर-घर ला खोज डारो जिहां तुम्हर गांव के जमा अनाज ला ये चोरहा अपन गोदाम मा लुकाय हे, बांट डारो जेला जतिक जरुरत हे ।

मिश्रा – अरे बाप रे, नही-नही नारायणसिंह ! मेरे बच्चों को देख, मेरे परिवार को देख, मेरे ये पेट को देख, मेरे पेट को देख ।

नारायणसिंह – मिश्रा ! अतिक दिन ले हम किसान तोर परिवार ला देखेन, तोर बाल-बच्चा ला देखेन सेठ, अब तैं ये रात-दिन घाम-पियास मा लांघन-भूखन कमइया के पेट ला देख, जे पेट ला काली तैं लात मारे हस अऊ तैं ये गरीब के पारी आवथ हे तब तोर पेट ला देखाथस कोढ़िया, ये किसान के पेट ला अब तैं देख मिश्रा, येकर लइका ला जाके देख येकर परिवार ला जाके पूछ ? का खाय-पीये हव, कहिके अंधरा ? पर के पीरा ला कब जाने, कब जाने हस तेहर ? संगवारी हो अब अऊ काला देखथव ? ये कुकुर के घर ला देखो जिहां तुहर मेहनत के चीज ला ये चोरहा सकेले हे,

इंकलाब..

सभी महिला किसान – जिन्दाबाद..

(किसानों का बोरा-बोरा अनाज गोदाम से निकालना तथा आपस में बांटकर ले जाना)

(सभी का प्रस्थान)

(मिश्रा दुःख से उछल-कूद रहा है)

मिश्रा – (रोते हुए) मैं मर गया दादा..मैं लुट गया अम्मा..मैं मर गया दादा. मैं-मैं मर गया ।

मुनीम – (प्रवेश कर) ये लीजिये सेठजी, पवित्र गंगा जल दिमाक को ठण्डा कर लो ।

मिश्रा – अबे तुमको पानी सूझा है, मैं तो अब मर गया, मैं मर गया दादा..मैं मर गया ।

मुनीम – अरे भई सेठ, विधि के विधान ला कोन्हों नई जाने, कर्म प्रधान विश्व रचि राखा । जो जस करही ताही फल चाखा ।। सियावर रामचन्दर कीं जय. अरे पंडितजी, आप मन आघू ले पुलिस बुला ले रहितेव तो अइसन काबर होतीस ।

मिश्रा – मेरे को क्या मालूम मुनीमजी (रोते हुए) मैं तो समझा था कि ये लोग कुछ नहीं करेंगे, कुछ नहीं करेंगे ।

मुनीम – फेर जइसन नइ होय के रिहिस तइसन होगे, आय न भई ।

(पंडिताइन का प्रवेश)

पंडिताइन – अहो पंडितजी, हमुका तो देखव, का मधुबाला अस दिखव हो आय.

(गीत गुन गुनाकर.. आगेरे से घाघरा, मंगवादे रसिया मैं तो मेला देखन जाऊंगी)

मिश्रा – अरी पंडिताइन ! तू मेला देखने मर रही है और मैं आकाश और पाताल के बीच जाने को सोच रहा हूं, मैं मर गया दादा, मैं मर गया, मैं लुट गया, मैं बरबाद हो गया ।

पंडिताइन – अरे क्या हुआ बताओ तो सहीं ?

मिश्रा – मुनीमजी जाकर इनको खाली गोदाम को दिखा दो ।

मुनीम – चलिए पंडिताइन !

पंडिताइन – चलिए मुनीमजी !

मुनीम – आ...ओ आ...ओ आ...ओ ।

– अंक दूसरा –

– सीन पहला –

(अंग्रेज कमिश्नर इलियट का आफिस)

(इलियट कागजातों पर झुका हुआ है, उसी समय अनुपसिंह का मुखिया को लेकर प्रवेश)

अनुपसिंह – कमिश्नर साहब ये आदमी जमीनों का टैक्स वसूली नहीं किया आज तक, और इनका मुखिया नेता सेठ-साहूकारों के गोदाम से जबरदस्ती अनाज निकाल लिया और इन्ही लोगों को बांट दिया ।

कमिश्नर – हूं...क्यों ये सही बात है ।

मुखिया – हां ! ये सहीं बात ये ।

कमिश्नर – यवर बोस आफ नेम ?

अनुपसिंह – सर ! अंग्रेजी भाषा इनके समझ के बाहर है । बोल तुम्हारे मुखिया का नाम क्या है ?

मुखिया – मैं नइ जानव ।

अनुपसिंह – नहीं ! तुम झूठ बोल रहे हो ।

कमिश्नर – सच-सच बोलो ।

मुखिया – मोला नइ मालूम हे साहब ।

अनुपसिंह – (थप्पड़ मारकर) कुत्ते जानते हुए भी नही बताता है, बोल क्या नाम है तुम्हारे मुखिया का ?

मुखिया – मोला कुछ मालूम नइये ।

कमिश्नर – ये ऐसे नहीं बतायेगा ।

(हवा में हंटर हिलाते हुए)

अब बोल क्या नाम है उस आदमी का ?

मुखिया – नइ जानव, मैं नइ जानव ।

कमिश्नर – (हंटर मारकर) एक बार फिर पूछता हूं क्या नाम है ?

मुखिया – नइ जानव, नइ जानव ।

कमिश्नर – दुसरा बार फिर पूछता हूं क्या नाम है ?

मुखिया – मोला नइ मालूम ।

कमिश्नर – अब आखरी बार पूछ रहा हूं, बोल क्या नाम है ?

(नारायणसिंह का प्रवेश)

नारायणसिंह – नारायणसिंह !

कमिश्नर – हाउ आर यू ? तुम कौन ?

नारायणसिंह – जेन आदमी ला पूछत हस वही आदमी हव।

अनुपसिंह – हां साहब ये वही आदमी है ।

नारायणसिंह – अऊ तैं चमचा हरस हरामी, तेहर ये गरीब ला धर के इहां लाने हस, बदमाश, देख तोर का नतीजा होथे ।

(नारायणसिंह, अनुपसिंह के पेट में तलवार भोंक देता है)

कमिश्नर – (आश्चर्य से) ये क्या ! हमारे सामने, तुम्हारा ये अवकात, सिपाहियों पकड़ लो इसे ।

(सिपाही, नारायणसिंह को पकड़ने दौड़ते है, परन्तु

नारायणसिंह तत्काल कमिश्नर के पेट में तलवार का निशाना बना देता है)

नारायणसिंह – रुक जाव ! कमिश्नर साहब, तोर ये कुकुर मन ला कही दे हथियार नीचे फेक दे । नहीं ते तहुंला चमचा अनुप सिंह कस सजा मिलही ।

कमिश्नर – सिपाहियों हथियार नीचे फेक दो ।

(हथियार फेक देते है)

नारायणसिंह – ठीक है फेर ये आदमी ला छोड़े ला पड़ही ।

कमिश्नर – ठीक ! ओ आदमी को छोड़ दो ।

(मुखिया को छोड़ देते है)

मुखिया – नारायण भइया, नारायण भइया, नारायण भइया

(नारायणसिंह का ध्यान मुखिया के तरफ हो जाता है)

कमिश्नर – सिपाहियों पकड़ लो इसे ।

(सिपाही नारायणसिंह को पकड़ लेते है)

नारायणसिंह को जेल में ले जाओ इसका फैसला बाद में होगा ।

(नारायणसिंह को जेल में बंद कर देते है)

(परदा बन्द)

– अंक दूसरा –

– सीन दूसरा –

(सोनाखान का किसान, मजदूर, महिला, नवयुवकों का बैठक)

मुखिया – मोर भुइयां सोनाखान के किसान, मजदूर, नवयुवक अऊ महिला समाज, आज हमर मुखिया, नायक, गरीब के पोसइया, वीर

नारायणसिंह ला अंग्रेज दुश्मन हा जेल मा डार दे हे ।
अऊ ओ वीर पुरुष नारायणसिंह हा हम गरीब किसान मन के खातिर जेल मा हावे, हो सकत हे, अंग्रेज मन ओला मार डारही तेकर ले अच्छा आज हम वो वीर पुरुष के बचाय बर, सहायता करे बर जाबो, काबर के नारायण सिंह हमला भूख जैइसे काल के मुहु ले बचाये हे, ये भूइयां मां क्रांति के दिया ला जलाये हे, अऊ ये माटी के किरिया खाके केहे हे के हम सब आज हमर अधिकार बर अपन हक बर मर मिट जाबो, तब का हम अतकी नइ कर सकन, के हमर रस्ता देखइया ला बचाय के वोला छोडाव, का नारायणसिंह ला जेल ले नइ निकाल सकन, कौन जाही कोन अपन परान ला देये बर तैयार हे, कोन माई के लाल हे, जेन हर नारायणसिंह ला बचाय बर जा सकथे ।

शांति – भाई हो ये काम ला मैं करहूं ।

मुखिया – शांति, ये काम ला ये मरद मन नइ कर सकत हे, तेन ला तैं का कर सकबे ?

शांति – भाई हो ! इतिहास के पन्ना मा लिखे हे, महारानी गोड़वाना के दुर्गावती, का वोहर नारी नोहे, झांसी के रानी लक्ष्मीबाई, जेहर आज भारत के आजादी बर मोर्चा करत हे, का वोहर नारी नोहे, नारी के पास वो ताकत हे भाई हो, चाहे तो ईश्वर ला जीत सकथे, नारी मा ओ बल हे, जेहर अपन

शक्ति मा जम्मो पृथ्वी ला हिला सकथे ।

मुखिया – शांति ! नारी तो एक दासी ये, नारी दुनिया से हारी हे, तुमन कैइसे करहु दुश्मन करा जाके ?

शांति – धरम भइया ! नारी के मांग में जे सेन्दुर तुम्हर जैइसे मरद मन भरथे वोहर सेन्दुर नोहे भाई हो, क्रांतिकारी नारी मनके अरमान अऊ देश भक्ति के लहु ये नारी सती अऊ देवी, बखत मा दुश्मन बर आगी इगिरा बन जाही, नारी अऊ पुरुष मा एक बरोबर ताकत अऊ बुद्धि रहिथे, फेर पुरुष मन नारी ला एक दासी बना लेहे, हमू नारी मनके भारत के आजादी बर लड़े के हमरो अधिकार हे ।

मुखिया – सिरतोन शांति तोर कहना बिलकुल सही ये सही मा हम पुरुष नारी ला अपन बन्धन मा राखे हन, नारी ला कभू स्वतंत्र विचार करे बर नइ देवन, पर नारायणसिंह येकर पहिली संगठनकर्ता हे ।

पारो – भाई हो ! भारत के नारी, नारी नहीं.. दुर्गा के साक्षात रुप ये, अऊ ये बेरा मा अब महाकाली के जनम धरही, भाई हो ! नारायणसिंह ला बचाय बर हम सब बहिनी मन जाइन्गे, अऊ कोन्हो हमर रस्ता मा पथरा बनके छेंक ही तो वोकर परान नइ बांचे, आज हम नारी देखा दिन्गें कि नारी के हिरदे मा अपन मुखिया बर का जगा हे ।

शांति – भारत के नारी ! जिन्दाबाद..

समो किसान महिला – जिन्दाबाद..

शांति – इंकलाब ! जिन्दाबाद..

सभी किसान, महिला – जिन्दाबाद. जिन्दाबाद..

मुखिया – आज मोला बहुत गर्व होवत हे कि छत्तीसगढ़ के अचरा मा सउहत देवी मन जनम धरे हे, धन्य हे भारत के नारी, जेन हर अपन अधिकार बर आज सब कुछ अर्पण करे बर तैयार हे ।

सोनू – गांव के किसान भाई हो ! हमर नवयुवक मन बर बुता नइये का ?

मुखिया – का बात ये सोनू !

सोनू – का हमर दाई, बहिनी मन हमर राहत ले नारायणसिंह ला छोड़ाही, का हम जवान मन मरगे हन, नारायण भइया जैसे हमरो हिरदे मा क्रांति के ज्वाला धधकत हे, मुखिया ठाकुर ! आजादी बर हम दुश्मन से लड़ सकथन, देश के खातीर अपन परान ला दे सकथन, दाई, बहिनी मन ला हम नइ जावन देन, जब ये देश मा मरद नइ रही तब देखे जाही ।

जानू – नहीं रे सोनू ! भारत के नर, नारी मन सबो बेटी, बेटा अन, सबो के बरोबर मया हे, हम सब भाई, बहिनी मिल के आजादी के खातीर कुरबान हो जाबो ।

मुखिया – ये बात सही ये ।

सभी किसान, महिला – हव ये बात सही ये, ये बात सही ये ।

गीत – ५

चल मजदूर चल किसान, देश के हो महान
तोर संग संग, मा चलही बनिहार
मिल जुल के सबोझन, सोसन ला टारबो
छत्तीसगढ़ दाई के हावे रे गोहार

ये छत्तीसगढ़ भुइयां मा हम जनम धरके आये हन
धन्न हमर भाग ये महतारी सुघर पाये हन
येकर गोदी मा पलेन करबो दुध के छुटान
मिल जुल के सबोझन, सोसन ला टारबो
खाके कसम अत्याचार ला भगाबो
इंकलाब जिन्दाबाद के नारा ला लगाबो
इंकलाब जिन्दाबाद, जिन्दाबाद, जिन्दाबाद
मजदूर किसान जिन्दाबाद
जिन्दाबाद, जिन्दाबाद, जिन्दाबाद
के पुरा छत्तीसगढ़ भुइया मा होही रे गुन्जार
मिल जुल के सबोझन, सोसन ला टारबो
ए छत्तीसगढ़ महतारी के हम सपूत बेटा, हम सपूत..
वीर नारायणसिंह के बगराबो गा सदेश ला, बगराबो रे
लाल सूरज उगं रे होगे गा बिहान
मिल जुल के सबोझन, सोसन ला टारबो
एक ही नारायण से हजार नारायण बनगे हे, हजार..
हजार से देखो अब लाख नारायण होवत हे, लाख..
लाख से करोड़ होही, देये बर कुरबान
मिल जुल के सबोझन, सोसन ला टारबो
नदिया कस पुरा हमन आघू बढ़त जाबो..२
रोक नई सके कोई, तूफान से टकराबो..२
अत्याचार टारबो, भ्रष्टाचार मिटा देबो..२
ये माटी के राख ले वो मन,
मिल जुल के सबोझन, सोसन ला टारबो
सोसनवादी, पूंजीपति, ठेकेदार सावधान..२
छत्तीसगढ़ के जाग उठीन देखो अब मजदूर किसान..२
मत करो खिलवाड़ "छोड़ो अत्याचार" नही तो किसान के,
आंखी ले बरसही अंगार, मिलजुल के सबोझन सोसन ला टारबो

– अंक दूसरा –

– सीन तीसरा –

(रायपुर सेन्ट्रल जेल)

(नारायणसिंह को अंग्रेज कप्तान स्मीथ हाथ-पांव बांधकर उल्टा टांग दिया है और नीचे तेल को खौलती कड़ाही भट्ठे पर चढ़ी हुई है)

स्मीथ – (हंटर मारकर) हा.हा.हा.हा. नारायणसिंह, अमीरों का धन लुटने का और किसी के गले पर तलवार चलाने का यह पहला सजा हा.हा.हा.

नारायणसिंह – (क्रोध से) कुत्ता... जे आदमी किसान अऊ मजदूर के लहू, पसीना के कीमत नइ समझे ओकर वही मौत होथे ।

स्मीथ – (हंसते हुए) नारायण आज मुझे वो समय मिला है जो सजा देने का अधिकार मुझ पर है ।

नारायणसिंह – एक दिन हमरो गरीब मन के पारी आही अंग्रेज, तब देखबे एक के खातिर जम्मो अंग्रेज ला सजा मिलही, मौत से जो घबरा जाथं वो नारायणसिंह नोहे कुत्ता, गरीब मन ला दुःख पावत कभू सहन नइ कर सके ।

स्मीथ – (क्रोध से) नानसेन्स इडियट, आज तुम्हे वो मौत मरना है जो आज तक कोई नहीं मरा है ।

नारायणसिंह – एक दिन तहुंला ऐसे मरना पड़ही अंग्रेज तुहुंला तो खोजे में पानी घलो नइ मिले ।

स्मीथ – और आज तुमको हम पानी का लालच दिखाकर मारेंगे कुत्ता तो पता चलेगा ब्रिटिश

शासन किस प्रकार सजा देता है ।

नारायणसिंह – स्मीथ ! और वो सजा क्रांतिकारी देश भक्तों क लिए एक आग के चिन्गारी ये. स्मीथ ! क्रांति के ज्वाला भड़काये बर घी बन जाही ।

स्मीथ – (हंटर मारकर) देखता हूं तुझमें कितना दम है । (फिर मारता है)

नारायणसिंह – हू... हरामी साले, बेईमान जब तक किसानों के, मजदूर मनकें हृदय मा क्रांति के देश के खातिर एकता जैइसे ताकत हे, तब तक नारायणसिंह में दम है ।

स्मीथ – शटअप.. (हंटर मारकर) अब तेरा मौत आखरी है ।

नारायणसिंह – मौत नहीं रे गद्दार... खेल अभी शुरु होही ।

स्मीथ – (क्रोध से) सारजेन्ट !

सारजेन्ट – यस सर !

स्मीथ – इस नारायणसिंह के बच्चे को इतना मार मारो कि जीवन भर याद रहे कि अंग्रेजों का अनुशासन कितना कठोर है ।

नारायणसिंह – स्मीथ ! तोर अनुशासन कतको कठोर रही, एक दिन किसान मजदूर के आंखी ले निकले अंगार मा अइसे पिघल जाही जैइसे आगी कें आंच मा मोम हा पिघलथें ।

स्मीथ – (तीन बार हंटर मारकर) कुत्ता हमारे सामने जबान चलाता है, सारजेंन्ट ! क्या देंखते हो उधेंड़ दो साले का खाल और (तलवार देकर) यें लो तलवार इससे रस्सा को काट दो ताकि यें गिरकर कड़ाही में फ्राई हो जायें ।

जब अच्छी तरह से पक जायेगा तब किसी कुत्ते को खिला देना ।

सारजेन्ट – यस सर !

(एक सिपाही आकर स्मीथ के कानों में कुछ कहता है थैंक्यु कहकर चला जाता है)

(सारजेन्ट रस्सी काटने के लिए तलवार से वार करना चाहता है, तत्काल उसी क्षण दो आदिवासी युवक भाला लिये प्रवेश होते हैं)

दोनों – रुक जा ! हरामी साले, तोर मौत आ गेहे ।

(सारजेन्ट के पेट में भाला से वार कर नारायणसिंह को छुड़ाकर ले जाना)

गीत – ६

सारे अफसर उनके, जो सब कुछ करने को तैयार...
कानूनी किताबें उनके
कारखाने हथियारों के
जज और जेलर तक उनके
सारे अफसर उनके, जो सब कुछ करने को तैयार...
एक दिन ऐसा आयेगा
पैसा फिर काम न आयेगा
और यह जल्दी ही होगा
यह ढांचा बदल जायेगा...

– अंक दूसरा –

– सीन चौथा –

(पुलिस केम्प)

(खाली समय में अंग्रेज सिपाही मनोरंजन कर रहे हैं)

(परेड होने के बाद)

स्मीथ – क्यों जवान किसी को गाना वगैरह आता है ।

सिपाही नं. १ – नहीं सर !
स्मीथ – क्यों जवान तुमको गाना आता है ।
सिपाही नं. २ – नहीं सर ! मुझे भी गाना नहीं आता ।
स्मीथ – क्यों रे जवान तुम तो इसी एरिया का है न ।
सिपाही नं. ३ – यस सर !
स्मीथ – तब तो तुमको जरुर छत्तीसगढ़ी गाना आता होगा । क्यों जवान है न बात सही ।
सिपाही नं. ३ – यस सर ! लेकिन सर ठीक से गाना नहीं आता है ।
स्मीथ – खैर कोई बात नहीं, जो आता है वही सुनाओ हमें मनोरंजन चाहिए । बोर लग रहा है चलो. चलो.. शुरु करो, शर्माने की बात नहीं है, समझे ।
सिपाही नं. ३ – यस सर ! तो शुरु करुं सर ।
स्मीथ – हां..हां.. क्यों नहीं, शुरु करो ।
(सिपाही गाना गाता है, सभी जवान आनंद लेते हैं)

– गीत –

मैं पुलिस औ रे मैं पुलिस औ रे
थे थाना ये इलाका के पुलिस औ, मैं पुलिस औ रे
चोर अऊ लुटेरा मन, हावे मोर मितान
मैं पुलिस औ रे मैं पुलिस औ रे

(गाना के अंत में इलियट का क्रोधित होकर प्रवेश होना)
इलियट – व्हाट.. नान सेन्स, इडियट हमारा सब काम बेकार हो गया, तुम लोगों को क्या पता कि नारायणसिंह कौन था ?
स्मीथ – सर वह एक कातिल..
इलियट – वह कातिल नहीं, ब्रिटिश सरकार का सबसे बड़ा शत्रु है । समझे !

स्मीथ – सर ?

इलियट – हां गांव-गांव के किसानों को भड़काने वाला, उकसाने वाला और आजादी का फेरा लगाने वाला और साहूकारों को लूटने वाला नारायणसिंह था समझे ।

स्मीथ – लेकिन

इलियट – लेकिन वेकिन कुछ नहीं ।
उसे किसी भी हालत से जिन्दा नहीं तो मारकर लाना तुम्हारा काम है, अगर वह हाथ नहीं आया तो इसका नतीजा बड़ा खराब होगा और सुनो ।

स्मीथ – यस सर ।

इलियट – पहले तैयार करो फौज को, सभी हथियारों से ही समझे, फिर उसको पकड़ने का व्यवस्था करना और ये काम कल शाम तक हो जाना चाहिये । अब तुम जा सकते हो ।

स्मीथ – यस सर ।

(स्मीथ के साथ सभी सिपाहियों का जाना)

— अंक तीसरा —

— सीन पहला —

(नारायणसिंह का घर)

(नारायणसिंह विचार मे डूबे हुए टहल रहे हैं उनकी मां का प्रवेश)

मां – नारायण... का विचारथस बेटा ।

नारायण – दाई में सोचथव कि ये दुश्मन मन के अत्याचारी अब सहन नइ होवत हे । किसान मन के भूख मिटाना है, मजदूर के हर दुख ला टारना हे, देश ला आजादी कराना हे । ये देश ला हमर जइसे जवान बेटा के जरुरत हे दाई ।

मां – बेटा नारायण । ब्रिटिश सरकार के बड़ जन हाथ हे

बेटा । ये सरकार आज के नहीं तोर पुरखा ले दुश्मनी करत आत हे बेटा । ये घर बर, ये गांव बर, ये देश बर, नारायण तैं मोर आंखी के पुतरी अस नारायण। मोर जिन्दगी के सहारा अस बेटा । ते मोर अंगना के फूल अस नारायण । मौर कहना ला मान जा, ये दुश्मन मन के झमेला मा झन पर ।

नारायण – दाई. . . .तोला देखथव तो मोर भारत माता के रुप नजर, नजर मा झूल जाथे दाई । तोर पाका चून्दी, चांदी असन चमकत भारतमाता के ताज मुकुट हिमालय असन दिखथे । तोर आंखी के आंसू हा गंगा जमुना के निर्मल धारा असन लागथे । तोर हरियर लुगरा हा अइसे दिखथे महतारी जैइसे ये भारत माता के हरिहर खेती-खार के हरियाली असन । तोर पांव के पसौना सागर के लहरा मा धोके निकले तैइसे लागथे, दाई मोला देश के खातिर ये बेरा मा शुभ आशिष दे ।

मां – (रोती हुई) तैं मोला भुरियारत हस बेटा, मोला तैं लइका कस बनावत हस, नारायण झन जा बेटा, मोर कहना ला मान जा मोर बरजे ला सुन तैं मत जा ।

नारायण – दाई तैं रोथस दाई, तोला तो आज खुश होना रिहिस हे दाई, कि मोर बेटा अपन बाप के बदला लेये बर जावत हे कहिके, तोला तो खुश होना रिहिस महतारी कि आज मौर बेटा अपन देश के आजादी करे बर जावत हे कहिके, आज मोला हासत बिदा करना रिहीश दाई कि मोर बेटा अपन अधिकार ला लाने बर जावत हे कहिके. . . .दाई तैं सोच के देख दाई तैं विचार के देख, जब मैं नानकुन रिहेंव तब तोर तन के कपड़ा मा मोला ढाके रेहे दाई अपन खून ला

मोला पियाये, तैं लाघन-भूखन रहीके, आज तोर का हालत हे, आज तोर का परिस्थिति गुजरत हे, तेला देख तो दाई...ये देश मोर भुइयां महतारी हर तोर जैइसे रो-रो के काहत हे दाई...बेटा तोला मोर कोरा मा नान्हे ले बड़े करेंव नारायण। मोर तन के धुर्रा तोर तन मा लगे हे, आज बेटा ये तोर महतारी पर के हाथ मा हे.....येकर लाज ला राख, दाई तोर सही ये भूइयां घलो हमर महतारी ये, दाई (पांव छुकर) तोर पांव परत हव दाई मोला आशीर्वाद दे।

मां – नारायण। जा बेटा मोर आशिष हे बेटा, तोर दुनिया मा नाम चलय।

(मां का प्रस्थान तथा नारायणसिंह का नव वर्षीय नन्हा पुत्र का प्रवेश)

गोविन्द – कहां जावत हस बबा ?

नारायण – शिकार खेले बर बेटा।

गोविन्द – महूँ जऊ बबा, तोर सन महूँ जाहु मोला लेगबे ना अई बबा ?

नारायण – बेटा गोविन्द...ये शिकार जंगल के नोहे बेटा, ये खेदा देश के आजादी के, ये खेदा हर बघवा, चितवा के नोहे रे गोविन्द, ये खेदा अत्याचारी, कालाबाजारी भ्रष्टाचारी, शोषण करइया मन के खेदा य बेटा। तैं जाके कैइसे करबे ?

गोविन्द – बबा, तैं कहिथस ना बबा, हमला मरना हे जीना हे तो आजादी बर अपन अधिकार बर कहिके कहिथस न बबा ?

नारायण – हां....काबर ?

गोविन्द – तब हमरो अधिकार हे बबा, ये खेदा मा जिहां

नारायणसिंह जाही उहां ओकर बेटा गोविन्द घलो जाही, महूँ तोर सन जाहूँ ।

नारायण – तहूँ जाबे ना ?

गोविन्द – हां

नारायण – तोर तलवार कहां हे ।

गोविन्द – तँ तो नई बनवाये हस ।

नारायण – गोविन्द तोर बर तलवार बनाके लानहुँ तब ते काली शिकार खेले बर जाबे, अभी जा तोर डोकरी दाई सूते बर बलावत हे ।

गोविन्द – हव बबा काली जाहुँ ।

(गोविन्द का प्रस्थान)

नारायण – शांति ?

शांति – (प्रवेश होकर) काये गोविन्द के बबा ?

नारायण – तहुँ ला कुछ कहना ?

शांति – गोविन्द के बबा ..मोला तो बहुत केहेके रिहिस हे ठाकुर ...फेर (रोवत) डर लागथय कि कहीं झन कही देय के ?

नारायण – मँ जानत हव शांति ...के तोर आत्मा का काहत हे तोर मांग के सिन्दुर का काहत हे मँ देखत हव तोर बाहां के चूरी हा का काहत हे, पर.. शांति... मोर महतारी कस ये भारत के सियान दाई मनके ये सोना-खान के गोविन्द कस बेटा मन हा..अब शाँति तोर जंइसे नारी मन आज...आज चिल्ला-चिल्ला के कहत हे, शांति...नारायण हमला ये पर के गुलामी ले बचा ले, दहाड़ मार के काहत हे शांति, हमर लाज बचा ले कहिके..अपन अधिकार ला लान कहिके अपन आजादी बर ये नारायणसिंह के पुकार होवत हे, शांति

का करव मोर जाना फर्ज हे नारी मोला जाना जरुरी हे ।

शांति – ठाकुर, मैं तुहला जाय बर नइ रोकत हव, फेर मोर एक ठन अरजी रिहीस हे ।

नारायण– का बात हे ?

शांति – गोविन्द के बबा...ते किरिया खाय हस देश के खातीर बर आजादी बर, अपन अधिकार बर, येला जानत हव ठाकुर, फेर महुं तोर नारी हव अब महुला देश सेवा करेके समय दे दे, ये देश बर मोरो अधिकार हे ठाकुर ।

नारायणसिंह – शांति! तय काहत हस सही ला काहत हस, पर तोर अधिकार अभी में तोला देवत हव मोर महतारी ला भारत माता कस समझ बे शांति, अऊ ये सोना-खान के लइका ला गोविन्द जैइसे समझ बे, तब तोर अधिकार सबो दुनिया मा रही, मोर सुन्ना मा ये तोर पुरा नइ होही तो अपन अधिकार काहत हस ते हर ।

शांति – नहीं....(रोवत) नहीं गोविन्द के बबा ये सुख के बेला ये, ये आजादी के पहली मुहरत ये ठाकुर (पांव में गिकर) ये बेरा मा अपन मुहुं ले अइसन झन काहव ये गांव घर के छोटे बड़े मन हा तुहला काहत हे तुहर मनोरथ सपुरन होय...जाव ठाकुर जाव, तुहला मैं अभागिन नइ छेकत हव जाव ।

नारायणसिंह – (उठाते हुए) शांति, तब तैं मोला जाव कहिके बिदा करत हस तब ये तोर आंखी माँ आंसु ।

शांति – यें बिदा के बेरा मा सुख के सागर हा छलकत हे गोविन्द के बबा, अऊ तुहर सुख बर छलकते रही । (पांव में फिर झुक जाती है)

नारायणसिंह – नहीं शांति, ये सुख के नहीं ये दुख के, हां तैं रोवत हस, तोर मन रोवँत हे शांति, अऊ तैं रोवत मोर बिदा करत हस ।

शांति – ठाकुर, ठाकुर मोर तन रोवत हे, मोर मन हा रोवथे फेर मोर मांग के सेन्दुर हासत हे ठाकुर मोर बाहां के चूरी काहत हे के मोर पति अजर अमर हे । मोर माथा के टिकली हासत हे जोड़ी, मोर आत्मा हासत तुहर बिदा करत हे । ये तन अऊ मन एक दिखावा ये । ये आत्मा येकर साक्षात गवाही हे ।

नारायणसिंह – शांति आज मोला गर्व हे, तोर जैइसे नारी के लिये । अच्छा मोला बेर होवत हे शांति । मैं जावत हव ।

शांति – ऐकेच कनी रहा लेव (हासत)

नारायणसिंह – कावर-काबर (हासत)

(शांति अन्दर से आरती, माला लेकर आती है, टीका लगाकर आरती उतारती है और हार पहनाकर उनके चरण स्पर्श (प्रमाण कर) बिदा करती है ।

(तद पश्चात नारायणसिंह का प्रस्थान)

– अंक तीसरा – **– सीन पहला –**

— सोनाखान कुरूंपाट जंगल —

(अंग्रेजी फौज सोनाखान क्षेत्र का घेरा बंदी कर मोर्चा बंदी करना तथा सोनाखान के जागरुक किसान भी नारायणसिंह के साथ मिलकर लड़ाई के लिये मोर्चा बंदी करना)

(नेपथ्य से आवाज)

इनकलाब – जिन्दाबाद

अंग्रेज शासन – मुर्दाबाद

किसान मजदूर एकता – जिन्दाबाद
शोषणवादी सरकार – मुर्दाबाद
अंग्रेजों भारत छोड़ो – भारत छोड़ो, भारत छोड़ो
भारत माता की जय
"अंग्रेजी फौजों द्वारा गोली चलने की आवाज"
(नारायणसिंह अकेला टहल रहा है, अकस्मात सोनू का प्रवेश)

सोनू – (प्रवेश होकर) नारायण भइया दुश्मन के फौज आ गेहे तइयार हो जाव ।

नारायणसिंह – संगवारी हो अब बैइठे के बेरा नइये, अब आराम करेके समय नइये, अब हमला अपन आजादी बर, अपन अधिकार बर मरे के लडे के जुझे के समय आगे तईयार हो जाव आघू कदम बढ़ाये हन, कभू पाछू नइ हटन, इनकलाब - जिन्दाबाद ।

सभी किसान, महिला – जिन्दाबाद, जिन्दाबाद.

– गीत –

जन संगठन, जन आन्दोलन
जन युद्ध के रस्ता मां आघू बढ़ो
छत्तीसगढ़ के मुक्ति के खातीर, संगी कोई जतन करो
छत्तीसगढ़ के वीर बहादुर इही बात बतायेगा,
किसान आऊ मजदुर संगवारी के हित के खातिर कहातयेगा
ये भूइंया के हम सब बेटा, ये माटी के रक्षा करो...छत्तीसगढ़
ये भूइंया के मालिक आवे, इहां के मजदुर किसान हा गा
जेकर बेटा सरहद मा लड़त हे, देश के इही जवान ये गा
अत्याचार सोसन ला भगावो, कदम-कदम सब बढ़ते चलो
छत्तीसगढ़ के मुक्ति....
शोषणवादी, कालाबाजारी भगाए के रस्ता हावेगा
बन्नेच बात बताथो संगी, अब सब के मन भावेगा

गांव-गांव मा मोर संगवारी, पहली तुम संगठन करो
छत्तीसगढ़ के मुक्ति...
एकता के ताकत भारी होथे हर मांग ए पूरा करथे
वीर नारायणसिंह ठाकुर हा एकर बर कोशिश करथे
एकता ला मजबूत बनाके, सब अधिकार लेते चलो
छत्तीसगढ़ के मुक्ति..

नारायणसिंह – संगवारी हो ईट के जवाब पत्थर से देना हे मार डालोय दुश्मन मन ला, काट-काट के बली चढ़ा देव ये कुरुवाट देवता मा।.
इंकलाब – जिन्दाबाद
भारत माता की जय
अंग्रेजों भारत छोड़ो
अंग्रज शासन मुर्दाबाद...चलव।
(अंग्रेजी फौजों का मोर्चा)
(सभी हथियारों से लैस)

स्मीथ – सिपाहियों। मालुम पड़ता है, आन्दोलनकारी हमारे सामने बढ़ते आ रहे है, तुम लोग भी तैयार हो जाओ और जहां कहीं भी नारायणसिंह मिले बन्दुक की गोलियों से उनके शरीर को छलनी कर दो, साथ ही साथ कुछ सिपाही सोनाखान के बस्ती में जाओ और उस बस्ती को आग से जलाकर राख कर दो, बच्चों को जलते हुए आग में डाल दो औरतों को लुट डालो कोई भी मिले भून-भून के ढेर कर दो। तब हिन्दुस्तानियों को पता लगेगा कि एकता, संगठन बनाने का नतीजा क्या होता है, जावो जल्दी जावो।
(अंग्रेज सिपाहियों द्वारा सोनाखान बस्ती में आग लगा दिया जाता है। गांव के बस्ती छोड़कर बचाव

बचाव की आवाज लगाकर जंगल की ओर भागते है ।)

(नेपथ्य से) बचाव ! बचाव !

(सोनाखान बस्ती में आग लगने के बावजूद भी पुनः आन्दोलनकारी किसान मोर्चा सम्भालकर युद्ध करते है)

इनक्लाब जिन्दाबाद

अंग्रेज शासन मुर्दाबाद

शोषणवादी मुर्दाबाद

अंग्रेजों भारत छोड़ो

भारत माता की जय

(आन्दोलनकारी किसान एवंअंग्रेजी सैनिकों में तलवार एवं भाला से युद्ध का होना अनेक किसानों का घायल होना तथा अंग्रेज सैनिकों का भी घायल होना । अन्त में एक युवा किसान जानू का मोर्चा में गम्भीर रुप से घायल होना । अचानक नारायणसिंह का उन पर नजर पड़ जाता है ।) जानू कराह रहा है ।

नारायणसिंह – जानू...

जानू – नारायण...आह...

भईया...आज तोला...ये गरीब किसान...मजदूर ...आह...मन बर जिये ला पर ही । नारायण ...आह...आज तोला हजार साल....जिये ला पर ही । अब मे आखरी.....समय काहत हव ये मोर भाला ला मोर कांध मा जेहर हमर छत्तीसगढ़ के पहली हथियार ये । मोर कांध मा राख दे नारायण ..... । ये ला सदा उपर उठाय रहू हाय..... ।

[जानू का नारायण के गले में लिपटकर शहीद होना]

नारायणसिंह – जानू.....! नहीं जानू नहीं.... ।
तें मोला जिये बर केहे जानू अउ तेहर अपन भाई ला छोड़ के चल देय भाई । मोर शहीद किसान मजदूर महिला नवयुवक साथी हो ये तुंहर ये लहू के कसम । ये लहू मा रंगे माटी के कसम हे शहीद हो.... जब तक नारायण जीयत हे तब तक दुश्मन से टक्कर लेही (स्वंय) अब नारायण तोला चाहे आंधी रोके चाहे तुफां । परलय होय चाहे काल दुश्मन संग अब डटके हथियार चलाये ला पर ही । शहीद साथी अमर हो । इनक्लाब जिन्दाबाद शहीद भाई बहिनी हो लाल जोहार ।
इनक्लाब जिन्दाबाद ।

– गीत –

ऐ वतन ऐ वतन, हमको तेरी कसम
तेरी राहों पे जां तक, लुटा जायेगें
फूल क्या चीज है, तेरी कदमों पे हम
भेंट अपनी सरों की चढ़ा जायेंगें
ऐ वतन, ऐ वतन.....।

नारायणसिंह – इनक्लाब जिन्दाबाद
भ्रष्टाचारी अंग्रेज शासन मुर्दाबाद
भारत माता की जय, अंग्रेजों भारत छोड़ो ।
सरफरोसी की तमन्ना, अब हमारी दिल में है
देखना है जोर कितना, बाजू ये कातिल में है ।
इनक्लाब..... ।
(चारों तरफ से अंग्रेज सिपाही नारायणसिंह को घेर लेते हैं)

स्मीथ – (सीटी बजाकर)
पकड़ लो भागने ना पाये । हमारा काम पकड़ने का ।
अब सजा देगा सरकार । उठा कर ले चलो ।

– अंक तीसरा – **– सीन तीसरा –**

"रायंपुर का जय स्तम्भ चौक"

१९ दिसम्बर १८५७

(फांसी का फन्दा नारायणसिंह के गले पर है । नर-नारी उन्हे देखने आये है, तथा अंग्रेज सिपाही बन्दूक लेकर खडे हैं ।

कमिश्नर –फौज के सभी सिपाहियों चारों ओर तैनात रहो । अगर कोई किसी प्रकार आंतक, उपद्रव करता है, तो उसे गोली से भून दो । अब इसके मुंह का कपडा हटा दो ।

नारायणसिंह....गरीबों को, किसानों को, मजदूरों को तूने भड़का कर मौत के नींद सुला दिया और तुम....ब्रिटिश सरकार से बचने के लिए लुकता छिपता भागता रहा । आखिर हमारे बहादुर सिपाही तुम्हें पकड़ ही लिये । मालूम होना चाहिए नारायण इस अपराध का सजा किस प्रकार होगा हम सारे भारत के निवासियों को बतला देगे ।

समझे...हा...हा...हा...!

नारायणसिंह – अबे कुत्ता । नारायणसिंह मरेगा नहीं । बल्कि ये देश के हर एक नव जवानों के छाती में ताकत और आंख में अंगार तथा हाथ में एकता का तलवार ले कर तुम जैसे गद्दारों से टक्कर लेगा समझे ।

कमिश्नर –नमक हराम ।

नारायणसिंह – अरे कमीना...अंग्रेज नमक हराम तो तू है बेईमान

जो कि इस देश की नमक खाकर इसी देश के बेटों के साथ हरामीपना पेश आ रहा है ।

कमिश्नर –कुत्ता । जितना बकता है बक ले । जिसकी मौत आती है वह अक्सर ऐसा ही कहता है । हा...हा..!

नारायणसिंह – दुश्मन ! शोषण भ्रष्टाचारी के जड़ । ते ये मत सोच, के आज नारायणसिंह मर जाही तो हम सुख से रहिबो । अरे कमीना....एक नारायण के मरे ले, ये भुइयां मा लाखों नारायण जनम लेही । आज नहीं काली ये देश ला छोड़ के जाबे अंग्रेज । अतीक दूरिया जाबे ते अऊ इहा वापस नइ आ सकत । तोर य बन्दूक, तोर ये हुकुम, तोर ये फांसी कोन्हों ला डरुवा नइ सके समझे ।

कमिश्नर –नारायण.....अब तेरा फांसी का समय आधा मिनट बाकी है, कुछ कहना है या किसी से मिलना है तो मिल सकता है ।

नारायणसिंह – हत्यारा अंग्रेज । जिससे मुझे मिलना है वो तो तुम्हारे सामने खड़ी जनता की भीड है । जो कहना था उन लोगों के कलेजा, शरीर के अंग-अंग, रोम-रोम में भर चुका । अब तू सुन ले ये देश को छोड़ कर चला जा । भारत देश हमर ये, किसान के मजदूर के ये माटी मा चिन्हा हे, वीर के अऊ सूर के नारायण के आवाज–किसान मजदूर एकता जिंदाबाद

इनक्लाब – जिन्दाबाद ।
शोषणवादी – मुर्दाबाद ।
अंग्रेज शासन – मुर्दाबाद ।
इनक्लाब – जिन्दाबाद ।
इनक्लाब – जिन्दाबाद ।

कमिश्नर – इसे फासी पर झुला दो और गोलियों से इसके शरीर को छिन्न भिन्न कर दो । ताकि इसका नामो निशान ना रहे ।

(नारायणसिंह को फांसी पर लटका देना)

कमिश्नर – (हंसते हुए) हा हा.हा.हा.चलो सिपाहियो ।

(अंग्रेजों का खुशी मनाते हुए प्रस्थान तथा किसानों की भीड़ नारायणसिंह के शहीद तन को लेकर जुलुस के साथ श्मशान घाट ले जाना)

– गीत –

फांसी के तखते देख लिये हम
अब क्या बाकी रहा
हर कीमत पे शोषण मुक्त
करेगें ये जहाँ
एक शहीद की राह में
हजार पैदा होंगे
जुल्मों के खिलाफ संघर्ष हमेशा
चलते रहेगें
फांसी के तखते ..... ।
हाथों के पंजों से सूरज की किरण
रोक नहीं सकते
हमें मार के जन आन्दोलन को
रोक नहीं सकते
फांसी के तखते..... ।
सरफरोशी की तमन्ना

अब हमारे दिल में है
देखना है जोर कितना
बाजुए कातिल में है
फांसी के तखते..... ।

– गीत –

होगे मजदूर, किसान हलाकान
तानाशाही के खींच, खींच मा
तोर सुरता हा आथे वीर नारायण
ये जिनगी के बीच, बीच मा
हमला छोड़ चले तोर देश हा बिगड़गे
तोर सुरता हा..... ।
ये करोड़पति मन के निच्यट नियत हा गड़गे
ये पूंजीपति मन बटोरथे देश के सब धन
करके काला बाजारी, अत्याचारी भर डारिन
तिजोरी गा, लूट, लूट के
तोर सुरता हा..... ।

प्रकाशक — छत्तीसगढ़ मुक्ति मोर्चा, दल्ली-राजहरा (दुर्ग)

मुद्रक — विजय प्रिंटिंग प्रेस, स्टेशन रोड बालोद.